शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

माया वर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व

डॉ. बृजेश कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी)
शा. मालव कन्या उ.मा.वि. इन्दौर

शोध सारांश

हिन्दी साहित्य अपनी प्रारंभ से ही सामाजिक सरोकारों के प्रति प्रतिबद्ध रहा है। कवयित्री माया वर्मा अपने संस्कारों से सामाजिक सांस्कृतिक सन्दर्भों से जुड़ी महिला हैं। सामाजिक विसंगतियों ने माया वर्मा की चेतना को झकझोरा और व साहित्य कर्म की ओर उन्मुख हो गई। उन्होंने अपने व्यक्तित्व को अपने कृतित्व से संवारा और सामाजिकता का निर्वाह किया। जिसका प्रतिफलन उनके साहित्य में हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र में माया वर्मा की साहित्य साधना पर विचार किया गया है।

माया वर्मा का व्यक्तित्व

माया वर्मा के नारी-परिचय में ही उनका व्यक्ति परिचय सन्निहित है। उनका नारी धर्म और नारीत्व उनके व्यक्ति परिचय के बिम्ब-प्रतिबिंब है। अपने पारिवारिक संस्कारों से संस्कृत, आंचलिक साहित्यिक पवन से सुरभित तथा सामाजिक चेतना से आत्मविभोर माया वर्मा का जन्म 10 जून 1937 को ग्वालियर नगरी में श्री नारायण प्रसाद वर्मा तथा श्रीमती कृष्णा देवी के घर सुकन्या के रूप में हुआ। केवल सात वर्ष की उम्र में ही वे मातृविहीन हो गईं।

परिवार ही बच्चे की प्रारंभिक पाठशाला हैं। उनका लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा पिता और बड़े भाई भगवतीप्रसाद वर्मा के संरक्षण में हुई। उन्होंने 'साहित्य रत्न', 'धर्म विशारद', और 'संस्कृत प्रवेशिका की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

माया वर्मा बाल्यकाल से ही संयुक्त परिवार से जुड़ी रहीं और संयुक्त परिवार की संस्कृति से जीवनपर्यन्त उनका सम्बन्ध बना रहा। 4 दिसम्बर 1956 को ग्वालियर निवासी श्री महेश प्रसाद सक्सेना से उनका विवाह हुआ। वे आदर्श पत्नी, वत्सल माता तथा सामाजिक आदर्शों वाली समाजचेता कलाकार थीं। 20 मई 1998 को वे इस संसार से महाप्रयाण कर गईं।

सृजन के प्रेरणा स्रोत

माया वर्मा में काव्य लेखन की प्रतिभा जन्मजात थी। किशोरावस्था में ही उन्होंने कुछ रचनाएँ लिखीं। ग्वालियर नगर के सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्यिक और सामाजिक वातावरण ने कवयित्री के संवेदनशील मानस को अपनी ओर आकृष्ट किया और उन्हें काव्य मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। माया वर्मा के पारिवारिक परिवेश ने भी उन्हें काव्य सृजन की ओर प्रेरित किया। पारिवारिक सांस्कृतिक वातावरण ने उनके व्यक्तिगत जीवन तथा लेखन संदर्भित जीवन में सांस्कृतिक निष्ठाएँ अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित और फलित की। धर्म प्राण माँ ने संस्कृतिनिष्ठ पुत्री को काव्य प्रेरणाएँ प्रदान की। पति ने सदैव उनकी काव्य सर्जना में सहयोग दिया।

सन् 1967 में माया वर्मा पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के सम्पर्क में आयीं और वहां से काव्य तथा सामाजिक चेतना के स्वर प्रेरणा स्वरूप प्राप्त

हुए। माया वर्मा अपने काव्य सृजन के प्रेरण स्रोत अपने पूज्य गुरूदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को ही मानती हैं। 'जीवन सुरभि' के प्रारंभ में वे आराध्यपूज्य गुरूवर को सम्बोधित करती हुई कहती हैं -

"उसी स्रोत को, जिसका रस पी,
रचनाओं ने पाया प्राण।
उसी प्रकाश को, जिसकी किरणें,
करतीं जीवनतम से त्राण।।"

अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति उनका गहरा लगाव है। उनके प्रेरणा स्रोतों में यह सांस्कृतिक भाव सर्वाधिक प्रबल है।

सृजन का विकास क्रम

माया वर्मा की अब तक सोलह काव्य पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें एक खंड काव्य 'दहेज का दानव', दो संगीत रूपक 'भगवान श्रीकृष्ण', 'भगवान शिवशंकर', बारह काव्य संग्रह - युग निमंत्रण, प्रभात किरण, अर्चना गीत, जागृति गीत, युग पुरूष की विदाई, नए संदर्भ, बाल नीति शतक, युगऋषि श्रीराम शतक, बिल्ली के बच्चे, गागर में सागर, जीवन सुरभि तथा समर्पण हैं। माया वर्मा को उनकी साहित्य साधना के लिए अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए उनमें वर्धा तथा भोपाल से सम्बद्ध राष्ट्र भाषा प्रचार समिति सम्मान, मध्य भारतीय हिन्दी साहित्य सभा सम्मान, संस्कार भारती सम्मान, भारतीय बाल-कल्याण संस्थान कानपुर का सारस्वत सम्मान, अखिल भारतीय गायत्री का आचार्य स्मृति पुरस्कार, अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनंदन समिति, मथुरा का कवियत्री 'महादेवी वर्मा सम्मान' मुख्य हैं।2

कवियत्री माया वर्मा का साहित्य सृजन

युग निमंत्रण : इस युग निमंत्रण में युग परिवर्तन की सूचना है। यह युग परिवर्तन भौतिक और मानसिक दोनों धरातलों पर है। श्रम, सदाचार और आहत को राहत द्वारा ही पुनरूस्थान का मार्ग प्रषस्त हो सकता है। युवा वर्ग ही अपने त्याग-बलिदान से युग जीवन का हित साध सकता है।

"करने पुनरूस्थान जगत का, गतिमय चरण बढ़ाओ,
बहुत सो चुकी संस्कृति, जाओ और जगाओ।।"3

यहाँ गतिमय चरण, श्रम तथा संस्कृति, सदाचार का द्योतक है, जिनका युवा चरित्र में सन्निवेश आवश्यक है।

प्रभात किरण : इस काव्य संकलन में नवनिर्माण की महत्वाकांक्षा में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की जिज्ञासा-अभिलाषा है। कवियत्री नए युग को प्रभात किरण से आलोकित करना चाहती है। इसमें जीवन की विसंगतियों, समाज की दुर्भावनाएँ, अंध परम्पराओं का निषेध है, और शिष्ट समाज की कामना है।

"सदियों से सोचा, जागे यह देश महान
ऐसी कृपा करिए, कृपासिंधु भगवान।"4

देश का जगना है, प्रभात की किरण है।

अर्चना गीत : इस संकल्प के गीत भक्यात्मक, भावनापरक और करूणार्द्र हैं। जीव संसार के मायाजाल में लिप्त होकर अपने ईश्वरांश को भूल गया है। विचार करने पर जीवात्मा को अपने मूलरूप का आभास तो होता ही है। ईश्वर से जीव की यही अर्चना है कि वह इस भ्रमजाल से कैसे मुक्ति पाए:-

"बीच में भव सिंधु है, मैं नाथ कैसे पार जाऊँ?
आत्मा मैं- तुम परमात्मा ने फिर भी दरस पाऊँ।"5

E ISSN 2320 – 0871
17 दिसंबर 2017

कवयित्री में धर्म, नैतिकता, भक्तिभाव और नारी आदर्श पुरूषों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक है। इसका कारण है उनकी भारतीय संस्कृति से सम्बद्धता।

नए सन्दर्भ : 'नए सन्दर्भ' के गीत "नए आलोक, नई चेतना तथा नई दिशा-बोध के साथ भावानुभाव की ज्ञान गंगा में अवगाहन करने का अवसर पाठक को देते हैं।"6 कवयित्री की सामाजिक चेतना संदर्भित उदात्त भावनाएँ मर्मस्पर्शी हैं। 'नए संदर्भ' का गीत 'यह संकल्प हमारा' जीवन की समरसता-सम्पन्नता के प्रति अभिलाषित है संकल्पित है।

"हर प्यासे को जल, हर दुखिया को स्नेह रस-धारा।
पहुँचाए बिन चैन न पाएँ, यह संकल्प हमारा।।
मरूथल के सूखे आँगन में सुरसरि हम लहरा दें।
सूखे रहे मानस तल में श्रद्धा की धार बहा दें।।
यह संकल्प हमारा।।"7

इस नए सन्दर्भ की कविताएँ उदात्त भावोन्मेषी हैं, उनमें सार्थक संवेदनाएँ हैं। कल्पना की विशिष्टता सराहनीय है।

जागृति गीत : 'जागृति गीत' महिलाओं के जागरण संबंधी गीतों का संग्रह है। इसमें स्त्री की सुखद-दुखद अनुभूतियों के साथ भावात्मक संबंध स्थापित करते हुए उसकी वेदनोंन्मुख परिस्थितियों का समाधान भी प्रस्तुत किया गया है।

"अब और न दो इतनी पीड़ा/ जिसको नारी यह सह न सके।"8

पुरूष समाज से अपेक्षित सहयोग न मिलने पर वे शोषित नारियों को जाग्रत होने का आह्वान करती हैं-

"स्वयं ही बांध लो लय में, सृजन के गीत को रचकर,
किसी को क्या पता दे या न दे संकल्प वाले स्वर।"9

'जाग्रति गीत' के गीतों में परिवार बोध और नारी की करूण दशा कवयित्री की विचारसरणि की महत्वपूर्ण कड़ी है।

जीवन सुरभि : 'जीवन सुरभि' ही नहीं उनकी सम्पूर्ण रचना धर्मिता 'अर्थकृते' प्रयोजन से कोसों दूर है। व्यवहार ज्ञान की शिक्षा अमंगलकारी तत्वों का विनाश नैतिक मर्यादाओं और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा, मानव कल्याण, उच्चादर्शों का उपदेश इसके प्रयोजन हो सकते हैं।"10 सामाजिक जीवन में फैली कुरीतियों, विषमताओं और विसंगतियों पर गहरी चोट है।

"पीर दूसरों की जो समझे, ऐसा गढ़ो नया इंसान।
मानव बनकर रो सकता हो, ऐसा गढ़ो नया भगवान।"11

'जीवन सुरभि' की सभी रचनाएं प्रेरणास्पद हैं, उनमें 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' की भावना है।

बालनीति शतक : बच्चों को छोटी उम्र में जिन शिक्षाओं, प्रेरणाओं और भावनाओं को समझाया जाता है, वे संस्कार जीवन भर काम आते हैं। बाल्याकाल की षिक्षा ही भविष्य में चरित्र निर्माण में सहायक होती है। बाल नीति शतक की एक-एक पंक्ति में शिक्षा का सार छिपा है।"12 "बालनीति शतक का यह गुलदस्ता देश की बाल पीढ़ी को कवयित्री ने समर्पित किया है।13

बिल्ली के बच्चे : 'बिल्ली के बच्चे' संकलन में चौबीस बाल कविताएँ है, जिनकी भाषा और विचार अर्थ सुलभ हैं।

ये सभी कविताएँ बच्चों का उनके मानसिक विकास के स्तर के आधार पर मनोरंजन और बालसुलभ जानकारी प्रस्तुत करती हैं।

"चंदा मामा प्यारे-प्यारे। हम बच्चों के बहुत दुलारे।।
है आकाश तुम्हारा ही घर। इतने सारे तारे सुन्दर।।"14

बिल्ली के बच्चे" की कविताएँ निःतांत सरल, बालोचित और बाल मनोविज्ञान की प्रासंगिकता में हैं।

युग ऋषि श्रीरामशतक : सन् 1967 से माया वर्मा पं. श्रीराम शर्मा, आचार्य जैसे युगावतार महापुरूष के सम्पर्क में आईं, उनके व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों सार्थक हो गए। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को गुरू रूप में स्वीकार कर उनके व्यक्तित्व में संस्कृति निष्ठा, धर्मनिष्ठा, और समाज निष्ठा निरंतर बढ़ती चली गई है। मनुष्यता उनकी वाणी, शब्दार्थ और स्वांस में समा गई। उन्होंने 'युग ऋषि श्रीराम शतक' में अपने गुरू के समग्र जीवन को एक सौ आठ छंदों में निबद्ध किया है। वे श्रीराम शर्मा का परिचय इस प्रकार देती हैं -

"कथा सनो गायत्री सुत की जो है तेज पुंज साकार।
युग का ऋषि, नवयुग सृष्टा जो साक्षात, प्रज्ञा अवतार।।"

युग पुरूष की विदाई : आचार्य प्रवर श्रीराम शर्मा 1970 में सदैव के लिए तपस्या पर गए थे, किन्तु युग की पुकार पर उन्हें अपना निर्णय जनहित में बदलना पड़ा और वे वहां से आकर हरिद्वार में रहने लगे। इसी संदर्भ से प्रभावित होकर माया वर्मा द्वारा यह काव्य रचना तैयार की और अपनी भावोर्मियाँ युग पुरूष के चरणों में समर्पित कीं।

"नवयुग के ब्रह्मर्षि चले तुम, आज पुनःगिरि पर तपने।"15

दहेज का दावन : 'दहेज का दानव' एक खंड काव्य है। इसकी कथा दहेज को सामाजिक-अभिशाप के रूप में प्रस्तुत करती है। दहेज के कारण ही कन्या परिवार के लिए भार है - अभिशाप है वह पुत्र की तुलना में उपेक्षित है। आज के सन्दर्भ में कुछ परिवर्तन आया है, किन्तु अर्थ लोभी समाज इस दहेज दानव को जिंदा बनाए हुए हैं।

इक्कीसवाँ जोड़ा : दहेज का दानव' और 'इक्कीसवां जोड़ा' माया वर्मा के समानार्थी दो पद्य और गद्य रूप है - एक है संगीत नाटिका और दूसरा है उपन्यास। इन दोनों ही साहित्य रूपों में हिन्दू समाज की कुप्रथा दहेज प्रथा को सामाजिक चेतना की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया गया है।

भगवान श्रीकृष्ण : यह कृति संगीत रूपक है, जिसमें श्रीकृष्ण के जीवन की प्रमुख घटनाओं को यथार्थ और विश्वसनीय संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। माया वर्मा परोपकार भाव को कृष्ण के चरित्र में देखती है। दावाग्नि में फंसे ग्वाल-वालों की रक्षा के लिए कृष्ण की तत्परता महत्वपूर्ण लोकदृष्टि है -

"बचा लेना मुसीबत से, पड़ा विपत्ति में कोई।
सहायक बनो निराश्रित के, किसी के हेतु मर जाना।
तकाजा है मनुजता का, सुनो कुछ काम कर जाना।"16

कृष्ण द्वारा सुदामा की सहायता-सहयोग में भी लोक-सम्मत दृष्टि है।

भगवान शिवशंकर : माया वर्मा के इस संगीत रूपक में शिव जीवन लोकमंगल और जनकल्याण से जुड़े हैं। 'शिव' के शब्दार्थ में कल्याण का भाव वर्तमान के अर्थ में सर्वाधिक प्रासांगिक है। माँ

पार्वती पुत्र गणेश को पिता शिव के अद्भुत वेश धारण के सम्बन्ध में बताती हैं :

"जग को शिक्षा देने के लिए वेश यह धरा है।
सीखें कुछ अच्छी बातें सब, उनने यही विचारा है।।
गंगा को सिर पर आश्रय देकर उनने यह सिद्ध किया।
जिसने परहित भार उठाया, जग में मानव वही जिया।।
और चन्द्रमा शीतलता का, अमृतमय रसमयता का।
है प्रतीक अतएव उसे मणि-मुकुट बनाया है सिर का।।17

कवयित्री ने अपने चिंतन और सृजन दोनों में पौराणिक आख्यानों को वर्तमान की प्रासंगिकता में देखने का प्रयास किया है।

सृजन के महत्वपूर्ण बिन्दु

माया वर्मा ने अपनी कृतियों में व्यंजित विचार बिन्दुओं को निम्नांकित रूप में प्रस्तुत किया है - 1. लोकमंगल की भावना और लोकमानस का परिष्कार, 2. भारतीय संस्कृति और भारतीय जीवन मूल्यों में निष्ठा, 3. दर्शन दृष्टि और गायत्री परिवार, 4. राष्ट्र प्रेम और नवचेतना, 5. परोपकार भारतीय वांगमय का स्वर, 6. शिवम् और सौन्दर्य, 7. सशक्त नारी भाव, वत्सल भाव, 8. आप्तवाणी, सत्य बोलो और धर्मानुसरण, 9. सामाजिक विसंगतियां और दहेज, 10. प्राचीन में आधुनिक भावबोध, 11. आदर्श संयुक्त परिवार की संकल्पना, 12. भारतीय जीवन के साथ जुड़े देवताओं, ऋषियों और महापुरूषों के प्रति श्रद्धा समर्पण भाव।

निष्कर्ष

माया वर्मा का व्यक्तित्व और कर्तृत्व अपने संस्कारों, पारिवारिक परिवेश, सामाजिक चेतना के प्रभाव का परिणाम था। आंचलिकता और ग्वालियर के साहित्यिक वातावरण ने भी कवयित्री को काव्य सृजन की ओर उन्मुख किया। युगजीवन और युगीन परिस्थितियाँ तो उनके सृजन की प्रेरणास्रोत थीं ही, गायत्री परिवार के संस्थापक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य और उनकी युगनिर्माण योजना में कवयित्री ने अपने भावों-विचारों की प्रतिमूर्ति देखी और उन्हीं की प्रासंगिकता में अपने विचार व्यक्त किए।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. माया वर्मा, 'जीवन सुरभि' समर्पण पृष्ठ, पूज्य आराध्य गुरूवर को
2. डॉ. जमुना प्रसाद बडेरिया, युग निर्माण मिशन की मूर्धन्य कवयित्री पृष्ठ 4
3. माया वर्मा, युग निमंत्रण, पृष्ठ 30
4. माया वर्मा, प्रभात किरण, पृष्ठ 01
5. माया वर्मा, अर्चना गीत, पृष्ठ 22
6. माया वर्मा, नए संदर्भ, शुभाशीश, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य व भगवती देवी शर्मा
7. माया वर्मा, नए संदर्भ, पृष्ठ 10
8. माया वर्मा, जागृति गीत, पृष्ठ 8
9. माया वर्मा, तदैव, पृष्ठ 21
10. माया वर्मा, जीवन सुरभि, 'आमुख' प्रो. दिवाकर विद्यालंकार सेवानिवृत्त प्राचार्य म.ल.बा. महाविद्यालय, ग्वालियर
11. माया वर्मा, जीवन सुरभि, पृष्ठ 77
12. माया वर्मा, बाल नीति शतक, आत्मीय अनुरोध, पं. लीलापत शर्मा, व्यवस्थापक, युग निर्माण योजना, मथुरा।
13. माया वर्मा, बाल नीति शतक, प्राक्कथन, पं. लीलापत शर्मा, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।
14. माया वर्मा, बिल्ले के बच्चे, पृष्ठ 22
15. माया वर्मा, युग पुरूष की विदाई, पृष्ठ 30
16. माया वर्मा, भगवान श्रीकृष्ण, पृष्ठ 08
17. माया वर्मा, भगवान शिवशंकर, पृष्ठ 53